झारखण्ड के आदिवासियों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नृजातीय अस्तित्व एवं अस्मिता

श्रद्धा रानी कश्यप*

आदिवासी एक परिचय –

विश्व के अधिकांश देशों में आदिवासी निवास करते हैं, एवं इन्हें विभिन्न नामों जैसे आदिमानव, एबोरिजनल्स, जिप्सी, गिरीजन, आदिवासी एवं कई अन्य नामों से पुकारा जाता है। हमारे भारतवर्ष के सबसे प्राचीन समूदाय यहाँ के आदिवासी है जिसे भारतीय संविधान मे अनुसूचित जनजाति के नाम से संबोधित किया गया है। ये देश के विभिन्न दूरवर्ती क्षेत्रों यथा जंगलों, पहाड़ों और मरूस्थलीय क्षेत्रों में वास करते हैं। "ये प्रारंभ से ही दुरस्थ एवं निर्जन स्थानों पर वास करते आए हैं इसलिए आदिवासियों की अपनी अलग एवं विशिष्ट पहचान बनी रही है। आज भी दूरस्थ स्थानों पर आदिवासियों को सैकड़ों वर्ष पूर्व की सभ्यता में जीवन यापन करते हुए देखा जा सकता है।" (मेहता; 2009 : 37)

झारखण्ड एवं झारखण्ड के आदिवासी :–

झारखण्ड एक आदिवासी बहुल राज्य है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग 26.2 भाग जनसंख्या अनुसूचित जनजाति है। यहॉ के आदिवासियों तथा मूलवासियों के द्वारा अपनी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई अस्मिता को पहचान दिलाने के वर्षों के संकल्प एवं तीव्र आंदोलन के बाद भारत के 28 वें राज्य के रूप में झारखण्ड का गठन 15 नवंबर 2000ई को हुआ। झारखण्ड संस्कृति की पहचान का आधार यहॉ की आदिवासी संस्कृति की विरासत ही है। झारखण्ड में 32 प्रकार की जनजातियाँ वास करतीं हैं। इनमें से आठ को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। इन आदिवासी समुदाय की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर, भाषा एवं बोली, वेषभूषा, सभ्यता, संस्कृति, लोकाचार एवं रस्मों रिवाज हैं। जो इनकी विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, और नृजातीय पहचान को परिलक्षित करता है।

छोटानागपूर में मुख्यतः दो समुदाय के लोग रहते आए हैं – आदिवासी और गैर आदिवासी। आदिवासियों में संथाल, उरॉव, मुण्डा, हो, खेरवार, लोहरा, खड़िया, भूमिज, गोंड, महली, बेदिया, चेरो, करमाली, चीक बड़ाइक, किसान, बिंझिया, कंवर, कोल, बिरहोर, बैगा, माल पहाड़िया, सौरिया पहाड़िया, सबर, खोंड, बथुड़ी, बंजारा, बिरजिया, गोड़ाइत, असुर, कोरवा, कोरा, एवं परहिया हैं। प्रजातिय दृष्टि से इनमें से कुछ तो प्राक द्रविड़ जातियॉ हैं, कुछ द्रविड़, कुछ प्रोटो आस्ट्रेलायड और कुछ अन्य। (केसरी : 1979 : 85)

अध्ययन का उद्देश्य –

1 झारखण्ड के आदिवासियों की अस्मिता की प्रमुख बिंदू का उजागर करना।

2 आदिवासियों के अस्तित्व एवं अस्मिता के समक्ष विभिन्न कालखंडों में उत्पन्न चुनौतियों को प्रस्तुत करना।

अध्ययन पद्धति – प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक स्रोतों जैसे विभिन्न झारखण्डी विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों से प्राप्त तथ्यों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है।

झारखण्डी आदिवासियों के अस्मिता के आधार –

झारखण्ड के आदिवासियों की अस्मिता को प्रजातीय, भाषाई, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन दर्शन के आधार पर समझा जा सकता है –

प्रजाति – प्रजातीय तत्व के आधार पर झारखण्ड की जनजातियों को प्रोटोआस्ट्रेलायड वर्ग में रखा गया है। कुछ नृशास्त्रियों ने इन्हें प्रोद्रविड़ियन, वेडायिक, निषाद या वेडिड आदि कहा है। सेवल और गुहा (1928) तथा हट्टन (1933) ने झारखण्ड की सभी जनजातियों के लिए प्रोटो आस्ट्रेलायड श्ब्द का प्रयोग किया है। (शर्मा : 2011 : 27)

* एम0फिल0 शोधार्थी, राँची विश्वविद्यालय, राँची, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, यू.जी.सी. नेट

भाषा – भाषा व्यक्ति के आत्मअभिव्यक्ति का जरिया है। यहाँ के आदिवासियों की अपनी भाषा है जो अत्यंत प्राचीन है। '' भाषा के आधार पर झारखण्ड की जनजातियॉ दो भागों में बॅट जातीं हैं – आस्ट्रिक (मुण्डा भाषा) और द्रविड़ियन। द्रविड़ भाषा के अंतर्गत 'कुडुख', मालतो, बदगा, कोरवा आदि भाषाऍ आतीं हैं। आस्ट्रोएशियाटिक परिवार की मुख्य भाषाऍ मुण्डारी, संथाली, हो, खेरवारी, गोंडी, खड़िया, सबर आदि भाषाऍ आतीं हैं।'' (शर्मा :2011 : 28)

सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन दर्शन – आदिवासी जीवन दर्शन की बुनियाद में सामुहिक जीवन पद्धति, स्त्री पुरूष सहभाग, प्राकृतिक संसाधनों पर समाज का हक, श्रममूलक जीवन की प्रतिष्ठा सर्वानुभूति आधारित पारंपरिक जनतंत्र, सामुदायिक पारंपरिक शासन व्यवस्था है यह हर मानव के जीवन अधिकार के सम्पूर्ण अधिकार की गारंटी करता है। खुली धरती खुला आसमान की तरह उदात्त व्यवस्था जिसमें सभी उन्मुक्त होकर जीते और नाचते गाते हैं।(वासवी : 2003 : 94) आदिवासियों की सरलता सहजता उनका निश्छल स्वभाव तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता तथा आडंबररहित उनका आदिधर्म, प्रकृतिपूजक होना ही उनकी अस्मिता है उनकी पहचान है।

आदिवासी कहे जाने वाले लोगों का सदियों से वन से गहरा रिश्ता रहा है। वे शुरू से ही वन में रहते आऍ हैं, वन उनके जीवन का बुनियादी आधार रहा है। प्रकृति की हरी भरी गोद में ही उन्होंने अपने जीवन का हर व्याकरण सीखा और गढ़ा।(उर्मिलेश ; 1999 : 44)

झारखण्ड के आदिवासियों की संस्कृति, भाषा, नाचगान, रीति रिवाज, आचार विचार, टोटमिक संबंध आदि जल जंगल तथा जमीन से जुड़े हुए हैं। यदि उनके पास जल, जंगल, जमीन ही ना रहे तो उनकी संस्कृति, समाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक धरोहर नष्ट हो जाएगी। यदि उन्हें इन प्राकृतिक परिवेश से हटा दिया जाए तो उनकी रोजी रोटी का स्रोत हमेशा के लिए छूट जाऍगे। उनके लिए जीवन, जंगल और जमीन एक ही गूढ़ सच्चाई के तीन पक्ष हैं इन्हें एक दूसरे से अलग कर दिया जाए तो वे पेड़ से कटी डालियों की तरह खुद ब खुद सूख जाऍगे। (साहू ; 2007 : 21)

आदि धर्म– आदिवासियों का आदिधर्म प्रकृति पर आधारित है। पहाड़ नदी और जंगल ही इनके परमेश्वर के प्रतीकात्मक रूप हैं। ये बिना किसी मध्यस्थता के ही परमेश्वर से सीधे जुड़ाव कर सकते हैं। इनके कर्मकाणड धर्म एवं जादू के विश्वास पर आधारित हैं। ''आदिवासियों के धार्मिक अनुष्ठान सरल हैं, आडंबररहित हैं। इनके सारे देवता साल या अन्य वृक्ष में रहते हैं, इसलिए जंगल से इनका अटुट संबंध है। जंगल में इनके टोटमिक जीव रहते हैं। परन्तु विकाश के दौर में जंगलों की अंधाधुंध कटाई से यहॉ के लोगों की स्थिति कटे हुए ठूँठ के समान हो गई है।'' (साहू ; 2007 : 20)

झारखण्ड के आदिवासियों के अस्मिता पर हस्तक्षेप की पृष्ठभूमी – आज के वर्तमान समय में कोई भी ऐसा समूदाय शेष नहीं जिस पर कि अन्य समूदायों की सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव ना पड़ा हो अतः झारखण्ड के आदिवासियों के अस्तित्व एवं अस्मिता पर भी दूसरे समूदाय के लोगों की सभ्यता एवं संस्कृति, धर्म एवं रीति रिवाज का प्रभाव पड़ा जिसे स्पष्ट रूप से आदिवासी जनजीवन पर देखा जा सकता है –

आर्यों अथवा गैर जनजातियों से सम्पर्क – आर्यों की संस्कृति के सम्पर्क में आने से यहाँ की परंपरागत जीवनशैली में विपरीत परिवर्तन आया है। इनकी अपनी संस्कति एवं अर्थव्यवस्था काफी पिछड़ गई है।(साहू ; 2007 : 20)

आदिवासियों एवं सदान ने एकदूसरे से शुभ एवं स्वस्थ तत्व ग्रहण किए इसका प्रभाव दोनो के रहन सहन, खान – पान, पर्व – त्योहार, भाषा – साहित्य एवं संगीत – नृत्य आदि पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। (केशरी ; 1989 : 87) '' गैर आदिवासी जातियों ने जैसे ही आदिवासी गॉवों में बसना प्रारंभ किया वैसे अपने साथ साथ अपने देवी देवताओं को उन गॉवों में प्रतिष्ठत किया यही कारण है कि आज प्रत्येक गॉव में देवी मण्डप, शिव मण्डप, बजरंग बली के मंदिर इत्यादि देखने को मिलते हैं। दूसरी ओर आदिवासियों के देव स्थान – सरना, जाहेर, ससन इत्यादि धीरे धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। हलॉकि पहले यहॉ के आदिवासी बहुसंख्यक थे किंतु अशिक्षा के चलते वे अपनी अस्मिता को नहीं पहचानने के कारण अपने देवी देवताओं को छोड़ अन्य देवी देवताओं को ज्यादा महत्व देने लगे और अपनी सभ्यता और संस्कृति को हीन समझने लगे, परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के मुण्डा हिन्दूओं के देवी देवता जैसे शिव, दुर्गा,

काली, राम, कृष्ण इत्यादि को मानते चले गए। इतना ही नहीं ये अपने रीति रिवाजों को छोड़कर हिन्दू रीति रिवाज अपनाने लगे। आज पंचपरगना क्षेत्र के आदिवासी शादी व्याह, मृत संस्कार इत्यादि के अवसर पर ब्राह्मण द्वारा पुजा पाठ कराते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र के मुण्डाओं पर स्पष्ट रूप से हिन्दू धर्म का प्रभाव हमें दिखाई पड़ता है।'' (मुण्डा ;2003 : 84)

अंग्रेजों से सम्पर्क – झारखण्ड के जनजातीय क्षेत्रों में जब ब्रिटिश शासन ने हस्तक्षेप किया तब यहाँ जनजातीयों में बहुत सारे सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन हुए। ''अंग्रेजों ने फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाकर आदिवासियों का शोषण और दमन किया। स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर रूप से रहने वाले आदिवासियों को लगान देने पर बाध्य किया। (उर्मिलेश ; 1999 : 47)

दूसरी ओर शिक्षा एवं इसाई धर्म के प्रचार ने आदिवासी जीवन को बदलकर रख दिया। ''ब्रिटिश शासन काल में शिक्षा के प्रचार के साथ ही धर्म प्रचार का काम तेज कर दिया गया। ईसाई जनजातियों को विशेष सुविधाएँ मिलने लगीं। जनजातियों में आकर्षण ईसाई धर्म की ओर बढ़ गया। भारी संख्या में धर्म परिवर्तन होने लगा। (अनुज ; 2000 : 121)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात – आजादी के बाद झारखण्ड के जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगिक विकास हेतु विभिन्न परियोजनाओं को लागू किया जाने लगा जिससे आदिवासियों में विस्थापन की समस्या उत्पन्न हुई। उनकी पारंपरिक सामाजिक संस्थएँ एवं मान्यताएँ टूटने लगीं।

आजादी के बाद हमारी सरकार ने वन और वन्य जीवन को लेकर अबतक कई कानून बनाऍ हैं इनमें 1952 की वन नीति, फिर वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 और वन संरक्षण अधिनियम 1980 खास तौर पर उल्लेखनीय हैं लेकिन इन सभी कानूनों ने वन और आदिवासियों के सहजीवी रिश्ते की अनदेखी की और इस बुनियादी समस्या पर कोई सुचिंतित नीति नहीं तय की जा सकी। वन और वन संपदा से आदिवासियों को वंचित कर उनके लिए बदहाली का दरवाजा खोल दिया।

वर्तमान समय में आदिवासी अस्तित्व एवं अस्मिता के मुद्दे – किसी समूदाय की संस्कृति उसके जीवन के पुरे दायरे में अर्जित मूल्य बोध की पूँजी होती है। और उसके लिए पहचान (अस्मिता) के संकट का सवाल तब आता है जब वह देखता है कि उसपर आक्रमण हो रहे हैं, जब उसकी पहचान के विघटित होने का भय उसे आतंकित करता है। (मुण्डा ; 2002 : 29) वर्तमान में ऐसी ही स्थिति आज आदिवासियों के समक्ष आ खड़ी हुई है जिसके कारण उन्हें अपनी अस्मिता की रक्षा हेतु सोंचने पर विवश कर दिया है।

ये कुछ प्रमुख मुद्दें हैं जिसने आदिवासी अस्तित्व एवं अस्मिता के सवाल को प्रस्तुत किया है –

आदिवासी शब्द से परहेज– महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू एवं देश के अन्य बड़े नेताओं ने आदिवासियों को आदिवासी नाम से संबोधित कर गौरवान्वित किया है लेकिन इस शब्द को संवैधानिक मान्यता नहीं है। संवैधानिक शब्द है 'अनुसूचित जनजाति'। इससे ऐसा लगता है कि देश आदिवासियो के आदिवासी (प्रथम निवासी) होने को गंभीरता से नहीं ले रहे। (मुण्डा ; 2002 : 41)

अनुसूचित क्षेत्र के बाहर आदिवासी के रूप में मान्यता नहीं – अनुसूचीकरण के साथ यह बात भी लगी है कि जो आदिवासी समुदाय जिस अनुसूचित क्षेत्र में अनुसूचित है उसके बाहर आदिवासी के रूप में उसकी मान्यता नहीं है। इसी कारा झारखण्ड से जाकर असम के चाय बागानों में काम करने वाले आदिवासियों को आदिवासी के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है। इस तरह के आदिवासी भारत के कथित मुख्यधारा में ही अपनी जगह ढूंढने के लिए विवश हैं। (तदैव ; 2002 : 43)

आदिवासी भाषाओं का मान्यता नहीं – सिद्धांत रूप में मान्यता देते हुए भी व्यवहार में अब तक कोई राज्य ऐसा नहीं है जहाँ आदिवासी भाषाओं को सुनियोजित ढंग से किसी स्तर पर पठन पाठन का माध्यम बनाया गया हो। (तदैव ; 2002 : 44)

आदिवासियों की धार्मिक पहचान को मान्यता नहीं – जनगणना में जान बूझ कर आदिवासियों के आदि धर्म को एक निश्चित जगह न देकर और मात्र 'अन्य' का विकल्प देकर उन्हें परोक्ष रूप से स्वयं को हिंदू या अन्य घोषित करने को प्रोत्साहित किया गया। (तदैव ; 2002 : 45)

आदिवासियों का विस्थापन एवं बिखराव– वर्तमान समय में औद्योगिक विकास हेतु कई सारी परियोजनाएँ झारखण्ड में चलाई जा रहीं हैं जिससे जनहित और राष्ट्रीय विकास के नाम पर आदिवासियों का

विस्थापन बड़ी संख्या में हुआ है। विस्थापन के फलस्वरूप इनका सांस्कृतिक विघटन हुआ है और इनकी अस्मिता प्रभावित हुई है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोधपत्र को मैंने द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषित करने का प्रयास किया है जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि झारखण्ड की जनजातियाँ जो कि यहाँ की मूल निवासी हैं अपनी प्रजातीय, भाषाई, सामाजिक– सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के विभिन्न आकर्षक पहलुओं के द्वारा अपनी अलग एवं विशिष्ट पहचान बनाती है। विभिन्न कालखंडों में भिन्न भिन्न समूदायों के रीति–रिवाजों के संपर्क में आने के कारण यहाँ के आदिवासियों में उनका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। आर्यों के आगमन के साथ ही हिन्दू सभ्यता और संस्कृति से उनका परिचय हुआ और ब्रिटिश शासन काल में ईसाई धर्मावलम्बियों ने उन्हें अपने ईसाई धर्म से परिचित कराया। इसके बावजूद आदिवासी जन में अपनी विशिष्ट संस्कृति का प्रभाव इस कदर है कि आज भी इनको देखकर झारखण्ड के प्रथम निवासी होने का बोध होता है।

आज के वर्तमान समय में यहाँ के आदिवासियों के अस्तित्व एवं अस्मिता के कई सवाल मौजुद हैं जिनपर विचार करना अति आवश्यक है क्योंकि किसी भी समूदाय की अस्मिता उसके अस्तित्व, स्वाभिमान एवं आत्मगौरव से जुड़ी होती है। पूरे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इनकी प्रजाति, इनकी भाषा, इनका धर्म एवं संस्कृति इनकी विचारधारा को पहचान दिलाने की कोशिश की जानी चाहिए।

संदर्भ सूची –

1. मेहता, प्रकाशचंद्र (2009) आदिवासी संस्कृति एवं प्रथाएँ, डिसकवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 नई दिल्ली।
2 केसरी, विसेश्वरी प्रसाद (1979) : छोटानागपूर का इतिहास, विलियम कैरी स्टडी एण्ड रिसर्च सेन्टर। सिरानपुर (कलकत्ता)।
3 शर्मा, बिमला चरण (2011) : झारखण्ड : भूमी और भूमीपुत्र, झारखण्ड झरोखा राँची।
4 वासवी, (2003) : ताबेनजोम जमीन का हिस्सा, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा)
5 उर्मीलेश (1999) : झारखण्ड जादूई जमीन का अंधेरा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
6 साहु, चतुर्भुज (2007) : झारखण्ड की जनजातियाँ, के0 के0 पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
7 मुण्डा, रामदयाल (2002) : आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
8 मुण्डा, सुभाष चंद्र (2003) : पंचपरगना के मुण्डाओं पर हिन्दू धर्म का प्रभाव, कैलाश पेपर कन्वर्सन प्रा0 लि0 बुण्डु।
9 अनुज भुवनेश्वर (2002) : अतीत के दर्पण मे झारखण्ड, नॉवल्टी आर्ट प्रेस, मेन रोड राँची।